नीदें दिए गोते सुध बिना, ए जो सुपन का तन।
तिनको भी हकें न छोड़िया, सिर पर रहे रात दिन।। ४० ।।

माया ने हमारे सपने के तन को पहचान न होने के कारण खूब दुःखी किया। फिर भी श्री राजजी महाराज ने हमें छोड़ा नहीं और रात-दिन सिर पर खड़े रहे।

उमर अव्वल से आखिर लग, गुजरी सांई संग।
मैं पेहेले ना पेहेचाने, हक के इस्क तरंग।। ४१ ।।

मेरा जीवन शुरू से आखिर तक श्री राजजी के चरणों तले ही बीता। पहले मैंने श्री राजजी महाराज के प्रेम की लहरों को पहचाना नहीं। अब पहचान हो गई।

जो बात करनी है हकें, सो पेहेले लेवें माहें दिल।
पीछे सब में पसरे, जो वाहेदत में असल।। ४२ ।।

जो श्री राजजी महाराज को करना होता है वह पहले से ही दिल में ले लेते हैं। उसके बाद वह विचार परमधाम में सबके दिलों में आ जाता है, क्योंकि एकदिली है।

एक पातसाही अर्स की, और वाहेदत का इस्क।
सो देखलावने रूहों को, पेहेले दिल में लिया हक।। ४३ ।।

एक परमधाम की साहेबी और रूहों के साथ उनका कैसा इश्क है, यह रूहों को दिखाने के वास्ते ही श्री राजजी महाराज ने दिल में लिया।

जो पेहेले लई हकें दिल में, पीछे आई माहें नूर।
तिन पीछे हादी रूहन में, ए जो हुआ जहूर।। ४४ ।।

जिस बात को श्री राजजी महाराज ने पहले दिल में लिया, वह बाद में अक्षर के दिल में आई और फिर श्यामा महारानी और रूहों के दिल में आई और जाहिर हो गई।

वास्ते नूर-जलाल के, और हादी रूहन।
बोहोत बेवरा है खेल में, किया महंमद रूहों देखन।। ४५ ।।

अक्षर ब्रह्म के वास्ते और श्यामाजी महारानी और रूहों के वास्ते खेल दिखाने की बाबत संसार के धर्मग्रन्थों में और कुरान में बहुत ज्यादा विवरण है।

महामत कहे ए मोमिनों, हक साहेबी बुजरक।
बेसक इलम हक का, और हक का बड़ा इस्क।। ४६ ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज की साहेबी बहुत महान है। श्री राजजी महाराज की तारतम वाणी और इश्क भी बड़ा महान है।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। ३०५ ।।

बेसकी का प्रकरण

ए इलम इन वाहेदत का, हकें सो बेसकी दई मुझ।
नूर के पार द्वार बका के, सो खोले अर्स के गुझ।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि परमधाम की ऐसी एकदिली की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से श्री राजजी महाराज ने मेरे सब संशय मिटा डाले और अक्षर के पार अखण्ड परमधाम और परमधाम के छिपे रहस्यों को खोल दिया।

Nijanand App

चौदे तबकों ढूंढ़या, सब रहे दूर से दूर।
रूह-अल्ला के इलम बिना, हुआ न कोई हजूर।। २ ।।

चौदह तबकों के लोगों ने परमधाम को खूब ढूंढ़ा, परन्तु सब दूर ही रहे। किसी को पता नहीं चला। श्यामा महारानीजी के तारतम ज्ञान के बिना कोई उस पारब्रह्म को पहचान नहीं सका।

कई दुनियां में बुजरक हुए, किन बका तरफ पाई नाहें।
सो इलम नुकता ईसे का, बैठावे बका मांहें।। ३ ।।

दुनियां में कई ज्ञानी व विद्वान हुए, परन्तु अखण्ड परमधाम कहां है, कोई नहीं जान सका। अब ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी के तारतम ज्ञान ने अखण्ड परमधाम तक का ज्ञान दे दिया।

सो साहेदी देवाई महंमद की, सेहेरग से नजीक हक।
नूर के पार नूर-तजल्ला, इलम माहें बैठावे बेसक।। ४ ।।

उस परमधाम की गवाही मुहम्मद साहब ने भी दी। जिन्होंने पारब्रह्म को सेहेरग से नजदीक बताया। अक्षर के पार परमधाम के तारतम ज्ञान ने पहचान करा दी।

गिन तूं सुख बेसक के, जो इलम दिया नसीहत।
मेहेर करी मेहेबूब ने, हकें जान निसबत।। ५ ।।

इस परमधाम के अखण्ड सुखों को तारतम ज्ञान से बेशक होकर गिन लो। श्री राजजी महाराज ने तुम्हें अपनी अंगना जानकर तुम्हारे ऊपर कृपा की है।

सक ना तीन उमत में, सक ना खास उमत।
सक ना उमत फरिस्ते, सक ना कुंन कुदरत।। ६ ।।

अब तारतम वाणी से पता लगा कि संसार में तीन सृष्टियां हैं और ब्रह्मसृष्टि खासल खास है। ईश्वरी सृष्टि जिन्हें फरिश्ते कहते हैं तथा कुंन से पैदा माया की जीवसृष्टि है। इसमें किसी बात का संशय नहीं है।

खासल खास रूहें इस्क, और खासे बंदगी दिल।
आम वजूद जदल से, जिनों नासूती अकल।। ७ ।।

खासल खास ब्रह्मसृष्टि इश्क से तथा ईश्वरीसृष्टि दिल से बन्दगी करती हैं। बाकी आम खलक जीव सृष्टि जिनकी बुद्धि मृत्युलोक की झूठी बुद्धि है, जिद से मानते हैं।

रूहों लई हकीकत मारफत, गिरो फरिस्तों हकीकत।
आम खलक जाहेरी, जो करम कांड सरीयत।। ८ ।।

ब्रह्मसृष्टि ने हकीकत और मारफत के ज्ञान को लिया। ईश्वरीसृष्टि ने हकीकत के ज्ञान को लिया। बाकी जाहिरी जीवसृष्टि कर्मकाण्ड और शरीयत के रास्ते चली।

दो गिरो पोहोंची वतन अपने, तीसरी आम जो दीन।
सो तेता ही नजीक, जिनका जेता आकीन।। ९ ।।

दो जमातें ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि अखण्ड घर (परमधाम) और अक्षर धाम की हैं वह पहचान कर अपने-अपने वतन पहुंच गईं। तीसरी आम खलक (जीवसृष्टि) झूठे संसार की है। तीनों में जिनका जितना यकीन है उतना ही वह पारब्रह्म के नजदीक हैं।

Nijanand App

पाई तीनों की बेसकी, कुफर बंदगी इस्क।
ऐसा इलम इन दुनी में, हुई बका की बेसक।। १० ।।

इस संसार में ऐसा जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान आया जिसने तीनों सृष्टियों के संशय मिटा दिए। जीवसृष्टि ने कुफ्र से हटकर परमधाम की पहचान की। ईश्वरीसृष्टि सो रही थी। पारब्रह्म की बन्दगी से उसे पहचान हुई। ब्रह्मसृष्टि जो घर को भूल गई थी, उसे इश्क से घर की पहचान हुई।

सक ना पैदा फना की, सक ना दोजख भिस्त।
हिसाब ठौर की सक नहीं, सक ना ठौर कयामत।। ११ ।।

संसार बनता है, मिटता है। इसमें कोई संशय नहीं रह गया। कर्मों के अनुसार दोजख और बहिश्त मिलने में कोई संशय नहीं रह गया। क्षर, अक्षर और अक्षरातीत के तीन जुदा-जुदा ठिकानों में कोई शक नहीं रहा और कयामत के बारे में भी कोई शक नहीं रहा।

सक ना आठों भिस्त में, सक ना काजी कजाए।
बेसक किए आखिर लो, अव्वल से इमदाए।। १२ ।।

आठ बहिश्तें कायम होंगी। इसमें संशय नहीं रहा। खुदा खुद न्यायाधीश बनकर न्याय करेंगे, इसमें संशय नहीं रहा। शुरू से आज तक जो कुछ भी है, इसमें संशय नहीं रहा।

क्यों कर मुरदे उठसी, क्यों होसी हक दीदार।
क्यों कर हिसाब होएसी, ए सब रूह-अल्ला खोले द्वार।। १३ ।।

मुर्दे कब्रों से कैसे उठेंगे? कैसे उन्हें खुदा का दर्शन होगा? कैसे सबको न्याय चुकाए जाएंगे? यह सब रूहअल्लाह श्यामा महारानी के तारतम ज्ञान ने संशय मिटाकर भेद खोल दिए।

केते दिन कयामत के, क्यों कयामत के निसान।
ए सक कछुए ना रही, जो लिखी बीच कुरान।। १४ ।।

कयामत के दिन कितने बाकी हैं? कयामत के समय कितने, कैसे निशान जाहिर होंगे? यह जो कुरान में लिखा है अब उसके बारे में कुछ भी संशय नहीं रह गया।

सक ना दाभ-तूल-अर्ज की, सक न सूर मगरब।
बेसक हक कौल मोमिनों, रही ना सक कोई अब।। १५ ।।

कयामत के समय दाभतुलअर्ज जानवर कैसे जाहिर होगा? सूर्य पूरब से पच्छिम में कैसे उदय होगा? पारब्रह्म ने आने का वायदा मोमिनों से किया था। अब उसमें भी कोई संशय नहीं रहा।

सक ना आजूज माजूज की, आड़ी अष्ट धात दिवाल।
लिख्या टूटेगी आखिर, ए बेसक दुनी के काल।। १६ ।।

आजूज-माजूज अष्ट धातु की दीवाल को चाटकर अन्त में कैसे तोड़ेंगे, यह दुनियां के महाप्रलय के निशान हैं। इसमें भी संशय नहीं रहा।

रूह-अल्ला सब रूहन को, पाक कर देवें आकीन।
कुफर दज्जाल को तोड़ के, बेसक करें एक दीन।। १७ ।।

श्यामा महारानी रूहअल्लाह मोमिन को तारतम वाणी से निर्मल करके पारब्रह्म के ऊपर उनका यकीन पक्का करेंगे। जीवसृष्टि के कुफ्र को मिटाकर तारतम वाणी के ज्ञान से संशय रहित कर एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) में लाएंगे।

Nijanand App

ल्याया ईसा वास्ते मोमिनों, बेसक बका न्यामत।
करें हक जात पर सिजदा, इमाम मोमिनों इमामत।। १८ ।।

ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी मोमिनों के वास्ते जागृत बुद्धि की तारतम वाणी परमधाम से अखण्ड न्यामत लाए हैं। जिसके द्वारा इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी श्री राजजी महाराज की अंगना ब्रह्मसृष्टि के अग्रसर बनकर सबको हक जात पर (मोमिनों पर) सिजदा कराएंगे। वही सिजदा पारब्रह्म पर होगा, क्योंकि वह मोमिनों के दिल में बैठे हैं।

सक ना किसी अर्स की, सक न नूर-मकान।
सक ना बेचून बेचगून, सक ना चार आसमान।। १९ ।।

तीनों सृष्टियों के तीन धाम–बैकुण्ठ, अक्षरधाम और परमधाम में कोई शक नहीं रहा। शून्य और निर्गुण में संशय नहीं रह गया और न नासूत, मलकूत, जबरूत और लाहूत में ही कोई संशय रहा।

कहूं बेसक तिनका बेवरा, नासूती मलकूत।
ना सक आसमान जबरूत, न सक आसमान लाहूत।। २० ।।

इन चारों आसमानों का ब्यौरा नासूत (मृत्युलोक), मलकूत (बैकुण्ठ), जबरूत (अक्षरधाम) तथा लाहूत (परमधाम) की बाबत कोई संशय नहीं रहा।

सक नाहीं सरीयत में, न सक रही तरीकत।
सक नाहीं हकीकत में, सक न हक मारफत।। २१ ।।

शरीयत, तरीकत, हकीकत और हक की मारफत में कोई संशय नहीं रह गया।

सक न जुदी जुदी कयामत, सक नाहीं वाहेदत।
बेसक जुदी जुदी पैदास, ए जो कादर की कुदरत।। २२ ।।

तीनों सृष्टियों की जुदा-जुदा कायमी होगी। जीवसृष्टि आठ बहिश्तों में, ईश्वरीसृष्टि अक्षरधाम में तथा ब्रह्मसृष्टि परमधाम जहां एकदिली है, में जाएंगी। इसमें संशय नहीं रहा। अक्षर ब्रह्म की कुदरत ने तीनों को अलग-अलग ठिकाने से संसार में भेजा।

सक ना पेहेचान रसूल की, जो कही तीन सूरत।
बसरी मलकी और हकी, जो जाहेर होसी आखिरत।। २३ ।।

रसूल साहब की बसरी, मलकी और हकी तीन सूरतें कयामत के वक्त जाहिर होंगी, इसमें भी कोई संशय नहीं रहा।

सक ना जबराईल में, और सक ना मेकाईल।
सक ना सूर बजाए की, सक ना असराफील।। २४ ।।

जबराईल (धनी का जोश), मेकाईल (ब्रह्माजी) तथा जागृत बुद्धि का फरिश्ता असराफील के द्वारा सूर फूंकना (ज्ञान का बिगुल बजाना) में भी कोई संशय नहीं रह गया।

सक ना अरवाहें अर्स की, जो तीन बेर उतरे।
लैल में आए जिन वास्ते, कछू सक ना रही ए।। २५ ।।

रूहें खेल में परमधाम से तीन बार उतरी हैं इसमें भी कोई शक नहीं रहा। जिस खेल को देखने के वास्ते रात्रि में आए उसमें भी कोई संशय नहीं रहा।

Nijanand App

सक ना आए खेल देखने, ए जो रूहें आइयां बिछड़।
कर मेला नासूत में बेसक, ले नसीहत आए अर्स चढ़।। २६ ।।

पारब्रह्म से बिछुड़ कर रूहें खेल देखने संसार में आई हैं इसमें भी संशय नहीं रह गया। इस मृत्युलोक में सब रूहें मिलकर तारतम ज्ञान से नसीहत लेकर अपने घर परमधाम जाएंगी, इसमें भी कोई संशय नहीं रह गया।

महंमद ईसा अर्स में, पोहोंचे हक हजूर।
कर अर्ज सब मेयराज में, बेसक करी मजकूर।। २७ ।।

मुहम्मद साहब तथा ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामा महारानी) पारब्रह्म के पास पहुंचे और दर्शन में ब्रह्मसृष्टि के वास्ते चर्चा की। इसमें भी कोई संशय नहीं रहा।

महंमद ईसे किए जवाब, तिन में रही न सक।
सक नहीं पड़उत्तर में, जो हकें दिए बुजरक।। २८ ।।

मुहम्मद साहब और ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानीजी ने जो जवाब दिया उसमें भी कोई संशय नहीं रहा। फिर पारब्रह्म ने उत्तर में उन्हें माशूक कह कर बुजरकी दी, उसमें भी कोई संशय नहीं रह गया।

बीच सब मेयराज के, जेती भई मजकूर।
ए सक जरा ना रही, जो खिलवत तजल्ला-नूर।। २९ ।।

पारब्रह्म के मूल-मिलावे की बाबत दर्शन के समय जो कुछ भी चर्चा मुहम्मद साहब से हुई, उसमें कोई संशय बाकी नहीं बचा।

छिपी बातें बीच अर्स के, कोई रही न माहें सक।
पाई ऐसी बेसकी, जो लई दिल की बातें हक।। ३० ।।

परमधाम की जो बातें आज तक छिपी थीं और श्री राजजी महाराज के दिल की बातें जो आज तक मालूम नहीं थीं, वह सब मालूम हो गईं और अब कोई संशय न रहने से बेशक हो गए।

आगूं बेसक बड़े अर्स के, नूर रोसन जोए किनार।
दोऊ तरफों जरी जोए के, नूर रोसन अति झलकार।। ३१ ।।

परमधाम के आगे पूरब दिशा में जमुनाजी और उनके दोनों किनारे मोतियों से जड़े झलकार कर रहे हैं, इसमें भी संशय नहीं रहा।

सक नाहीं जल उजले, मीठा ज्यों मिश्री।
सक ना गिरदवाए बाग की, कई मोहोल जवेर जरी।। ३२ ।।

जमुनाजी का जल बहुत निर्मल है, मिश्री से अधिक मीठा है, इसमें भी कोई संशय नहीं रहा। जमुनाजी को घेरकर बाग आए हैं और वहां किनारे पर कई प्रकार के महल बने हैं जो जवेरों से जड़े हैं, इनमें भी कोई संशय नहीं रहा।

खुसबोए जिमी अति उज्जल, ज्यों सोने जवेर दरखत।
बेसक जंगल जवेर ज्यों, रोसन नूर झलकत।। ३३ ।।

परमधाम की जमीन अति उज्ज्वल है और खुशबूदार है। वृक्ष सोने और जवेरों से बने दिखाई देते हैं। परमधाम के वन जवाहरात की तरह जगमगा रहे हैं। इसमें भी कोई संशय नहीं रहा।

Nijanand App

सक नाहीं हौज ताल की, इत बोहोत मोहोल बुजरक।
बिरिख पानी ताल पाल के, सब पाट घाट बेसक।। ३४ ।।

हौज-कौसर तालाब में और सुन्दर टापू महल में, तालाब और टापू के चारों ओर के वृक्षों में, हौज-कौसर के पानी और हीरे की पाल में और जमुनाजी के पाट-घाट में कोई संशय नहीं रहा।

बेसक बड़े अर्स की, क्यों कहूं बड़ी मोहोलात।
बाग बड़ा गिरदवाए का, इन जुबां कह्या न जात।। ३५ ।।

परमधाम के बड़े विशाल महलों और बड़े-बड़े सुन्दर बगीचे जो चारों तरफ आए हैं, जिनका वर्णन इस जबान से करना सम्भव नहीं है उन सबके बारे में भी कोई संशय बाकी नहीं है।

इत सक मोहे जरा नहीं, बन गलियों पसु खेलत।
गिरदवाए गून्जे अर्स के, कई विध जिकर करत।। ३६ ।।

वन की गलियों में पशु तरह-तरह के खेल करते हैं और परमधाम के चारों तरफ उनकी मधुर ध्वनि आती है। वह कई तरह से 'राज-राज', 'धनी-धनी' का जिक्र करते हैं। इसमें भी किसी प्रकार का संशय नहीं है।

यों केती कहूं बेसकी, इनका नहीं हिसाब।
महामत देखावे हक इस्क, जो साकी पिलावे सराब।। ३७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं ऐसा ज्ञान जिसके प्रति तारतम वाणी से बेशकी हो गई और जो बेहिसाब हैं उसका वर्णन कहां तक करूं? अब मैं श्री राजजी महाराज जो इश्क की शराब पिला रहे हैं और अपना इश्क दिखा रहे हैं, उसका थोड़ा सा वर्णन करती हूं।

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ ३४२ ॥

सराब सुख लज्जत

नोट—शराब इश्क है। साकी अक्षरातीत पारब्रह्म हैं। पीने वाले मोमिन हैं। सुराही श्री राजजी का दिल है। प्याला मोमिनों की आंखें हैं।

साकी पिलावे सराब, रूहें प्याले लीजिए।
हक इस्क का आब, भर भर प्याले पीजिए।। १ ।।

श्री राजजी महाराज रूहों को इश्क की शराब पिला रहे हैं। हे परमधाम की आत्माओ! श्री राजजी महाराज के इश्क की शराब अपनी नजरों के प्याले से भर-भरकर पिओ।

हक आसिक रूहन का, इन इस्क का आब जे।
इन आब में जो स्वाद है, ए रस जानें पीवन वाले।। २ ।।

श्री राजजी महाराज रूहों के आशिक हैं और इनके इश्क की शराब में जो लज्जत है वह पीने वाले मोमिन ही जानते हैं।

नहीं हिसाब इस्क का, स्वाद को नाहीं हिसाब।
हिसाब ना तरंग अमल के, ए जो आवत साकी के सराब।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज का इश्क बेशुमार है और इश्क का स्वाद भी बेशुमार है। पीने वालों की मस्ती की तरंगें भी बेशुमार हैं, जो श्री राजजी महाराज के इश्क की शराब से आती हैं।

Nijanand App